घरेलू दुर्घटनाओं की गंभीर स्थिति

भारत डोगरा

हमारे देश में अधिकांश चर्चा सड़क दुर्घटनाओं के संदर्भ में होती है, जबकि घरेलू दुर्घटनाओं पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। जिन देशों में इस मुद्दे पर गंभीरता से कार्य हुआ है, उनका अनुभव बताता है कि घर में या उसके आसपास होने वाली घरेलू दुर्घटनाओं की संख्या बहुत अधिक है।

ब्रिटेन में दुर्घटनाओं को कम करने पर योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने में लगी संस्था रॉयल सोसायटी फॉर प्रीवेन्शन ऑफ एक्सीडेंट्स (रोस्पा) ने वहां के आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट कहा है, 'किसी भी अन्य स्थान की अपेक्षा सबसे अधिक दुर्घटनाएं घर पर ही होती हैं।'

इस तरह की घरेलू दुर्घटनाओं के बारे में ब्रिटेन के संदर्भ में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर रोस्पा ने बताया है कि इस कारण एक वर्ष में 5000 मौतें हुईं व 27 लाख चोट लगने या घायल होने के केसों को अस्पताल (एक्सीडेंट व इमरजेंसी विभाग) में ले जाना पड़ा। दूसरी ओर पिछले वर्ष सड़क दुर्घटनाओं में ब्रिटेन में 1730 मौतें हुईं और 1,85,540 लोग ज़ख्मी हुए। दूसरे शब्दों में, सड़क दुर्घटनाओं की अपेक्षा घरेलू दुर्घटनाओं में लगभग ढाई गुना अधिक मौतें हुईं और 14 गुना अधिक लोग घायल हुए।

इस तरह ब्रिटेन में गंभीर क्षति करने में घरेलू दुर्घटनाओं का योगदान सड़क दुर्घटनाओं की अपेक्षा कहीं अधिक पाया गया जबकि ज़्यादा चर्चा सड़क दुर्घटनाओं पर केंद्रित रही।

इसके अतिरिक्त घरेलू दुर्घटनाओं का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इससे प्रभावित होने वालों में बच्चों की संख्या बहुत अधिक है। ब्रिटेन के आंकड़े बताते हैं कि एक वर्ष में 15 वर्ष से कम आयु वर्ग के 20 लाख बच्चे घरेलू दुर्घटनाओं से इस हद तक प्रभावित होते हैं कि उन्हें अस्पताल तक ले जाना पड़ता है। 14 वर्ष से कम आयु वर्ग में 76,000 बच्चों को इस कारण अस्पताल में भर्ती भी करवाना पड़ता है। इनमें से 40 प्रतिशत से अधिक बच्चे 5 वर्ष से कम आयु वर्ग के होते हैं।

ब्रिटेन के इन आंकड़ों से पता चलता है कि सबसे अधिक दुर्घटनाएं गिरने से सम्बंधित होती हैं। घरेलू दुर्घटनाओं के कारण होने वाली आर्थिक क्षति का अनुमान लगाया जाए तो एक वर्ष में लगभग 46 अरब डॉलर की क्षति इस कारण अकेले ब्रिटेन में होती है।

घरेलू हिंसा के इस तरह के विस्तृत व प्रामाणिक आंकड़े भारत के संदर्भ में उपलब्ध नहीं हैं, पर जो सीमित जानकारी उपलब्ध है उसका संकेत भी इस ओर ही है कि घरेलू दुर्घटनाओं से काफी अधिक क्षति होती है पर इन दुर्घटनाओं का ठीक से आकलन न होने के कारण घरेलू दुर्घटनाएं उपेक्षित रह जाती हैं। डॉ. सुधीर, दीपा कृष्णा व अन्य विशेषज्ञों ने दक्षिण भारत में 3500 की जनसंख्या पर एक अध्ययन एक वर्ष तक किया था। इस दौरान लगभग 330 घरेलू दुर्घटनाओं की संख्या प्राप्त हुई अथवा जनसंख्या की तुलना में दुर्घटनाएं लगभग 10 प्रतिशत पाई गईं। इनमें से 210 दुर्घटनाएं गिरने से हुईं। 225 दुर्घटनाओं ने महिलाओं या बालिकाओं को प्रभावित किया। दूसरे शब्दों में, जहां सड़क दुर्घटनाओं में पुरुष अधिक प्रभावित होते हैं, घरेलू दुर्घटनाओं में महिलाएं कहीं अधिक प्रभावित होती हैं।

कुल मिलाकर घरेलू दुर्घटनाएं एक ऐसा उपेक्षित क्षेत्र है जिससे बहुत दुख-दर्द जुड़ा है व घरेलू दुर्घटनाएं कम करने की ओर अधिक ध्यान देना ज़रूरी है। ***(स्रोत फीचर्स)***